नमो-नमो दुर्गे सुख करनी। नमो-नमो दुर्गे दुःख हरणी।।

बुधवार, 19 अगस्त, 2026 ।

वर्ष 19 । अंक 124 । पृष्ठ 4 ।

आरएनआई नंबर : RAJHIN/2007/20298

व्हाट्स एप नंबर : 85291-15101

Email : berisgnr@gmail.com

website: www.sandhyadep.world

साँध्यदीप

We Fight For Human Rights

आज शाम 4 बजे घोषित होगा प्रदेश के 309 शहरी निकायों का चुनाव कार्यक्रम

जयपुर। राज्य निर्वाचन आयोग आज शाम 4 बजे प्रदेश के सभी 309 शहरी निकायों के चुनाव कार्यक्रम की घोषणा करेगा। राज्य निर्वाचन आयुक्त राजेश्वर सिंह प्रेस कॉन्फ्रेंस के माध्यम से चुनाव कार्यक्रम जारी करेंगे। चुनाव कार्यक्रम की घोषणा के साथ ही प्रदेश के सभी 309 शहरी निकायों में तत्काल प्रभाव से आदर्श आचार संहिता लागू हो जाएगी।

आचार संहिता निकाय चुनाव की पूरी प्रक्रिया संपन्न होने तक प्रभावी रहेगी। इसके लागू होने के बाद शहरी क्षेत्रों में विकास कार्यों से जुड़ी नई घोषणाएं नहीं की जा सकेंगी। साथ ही नए वर्क ऑर्डर जारी करने पर भी रोक रहेगी।

हालांकि, पहले से स्वीकृत और चल रहे विकास कार्य जारी रह सकेंगे, लेकिन नए कार्य शुरू नहीं किए जा सकेंगे। चुनाव कार्यक्रम घोषित होने के बाद संबंधित विभागों और स्थानीय निकायों को आचार संहिता के प्रावधानों का पालन करना होगा।

10,245 पार्षद पदों पर होंगे चुनाव

प्रदेश के 309 शहरी निकायों में कुल 10,245 पार्षद पदों के लिए चुनाव होंगे। इनमें 10 नगर निगम, 51 नगर परिषद और 248 नगरपालिकाएं शामिल हैं।

चुनाव प्रक्रिया के तहत पहले पार्षद पदों के लिए मतदान और चुनाव होंगे। इसके बाद निर्वाचित पार्षदों के माध्यम से मेयर, सभापति और नगरपालिका अध्यक्षों का चुनाव किया जाएगा।

चुनाव कार्यक्रम की घोषणा के साथ ही प्रदेश के शहरी क्षेत्रों में राजनीतिक गतिविधियां तेज होने की संभावना है। अब सभी की नजरें राज्य निर्वाचन आयोग की प्रेस कॉन्फ्रेंस पर टिकी हैं, जिसमें मतदान की तारीखों सहित चुनाव प्रक्रिया का पूरा कार्यक्रम सामने आएगा।

चलती कार में लगी आग

बिलासपुर। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में महाराणा प्रताप चौक के पास रिंग रोड पर मंगलवार रात चलती टाटा सफारी कार में अचानक आग लग गई। इंजन से धुआं निकलता देख चालक ने तत्काल वाहन सड़क किनारे रोक दिया और उसमें सवार सभी लोग सुरक्षित बाहर निकल गए। कुछ ही देर में आग ने वाहन को अपनी चपेट में ले लिया। हादसे में किसी प्रकार की जनहानि नहीं हुई है।

पुलिस ने बुधवार को यह जानकारी दी। पुलिस के अनुसार घटना सिविल लाइन थाना क्षेत्र की है। कार में युवक और अन्य लोग किसी काम से जा रहे थे। महाराणा प्रताप चौक के पास रिंग रोड से गुजरने के दौरान वाहन के इंजन से अचानक धुआं उठने लगा। खतरे का अंदेशा होते ही चालक ने सूझबूझ दिखाते हुए कार को सड़क किनारे रोक दिया और उसमें मौजूद सभी लोगों को बाहर निकाला। प्रत्यक्षदर्शियों के मुताबिक वाहन से धुआं निकलने के कुछ ही देर बाद आग की लपटें उठने लगीं और देखते ही देखते सफारी धू-धूकर जलने लगी। घटना के कारण मौके पर कुछ समय के लिए अफरातफरी की स्थिति बन गई।

कार में आग लगने की सूचना पर आसपास मौजूद लोग भी मौके पर पहुंचे। कुछ युवकों ने पास से रेत लाकर जलती कार पर डालना शुरू किया। इस बीच पुलिस और फायर ब्रिगेड को घटना की सूचना दी गई। दमकल और पुलिस टीम के पहुंचने से पहले ही स्थानीय लोगों ने काफी मशक्कत के बाद रेत डालकर आग पर काबू पा लिया।

आग बुझने के बाद क्षतिग्रस्त वाहन को सड़क से हटाया गया, जिसके बाद रिंग रोड पर यातायात सामान्य हो गया।

आग लगने के वास्तविक कारण का फिलहाल पता नहीं चल सका है। पुलिस को आशंका है कि बारिश की वजह से इंजन के वायरिंग में शार्ट सर्किट के चलते आग लगी होगी। इसके साथ ही वाहन में तकनीकी खराबी की भी आशंका जताई जा रही है। आग लगने के सही कारणों का पता जांच के बाद ही स्पष्ट हो सकेगा। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

उपखंड स्तरीय कार्यक्रम में उल्टा तिरंगा, प्रशासन पर उठे सवाल

झुंझुनूं (सुरेन्द्र सिंह)। झुंझुनूं जिले के नवलगढ़ उपखंड मुख्यालय पर स्वतंत्रता दिवस के मुख्य कार्यक्रम में राष्ट्रीय ध्वज के सम्मान को लेकर गंभीर लापरवाही सामने आई। सूर्यमंडल मैदान में आयोजित उपखंड स्तरीय समारोह के दौरान कथित तौर पर राष्ट्रीय ध्वज उल्टा फहरा दिया गया। इसी स्थिति में ध्वजारोहण और सलामी की प्रक्रिया भी संपन्न होने की बात सामने आई है। कार्यक्रम में अधिकारी, जनप्रतिनिधि, प्रबुद्धजन और बड़ी संख्या में आमजन मौजूद थे। बताया गया कि कुछ लोगों की नजर जब उल्टे तिरंगे पर पड़ी तो उन्होंने इस पर आपत्ति जताई। इसके बाद प्रशासन का ध्यान भी इस गंभीर चूक की ओर गया। घटना के बाद सबसे बड़ा सवाल यह उठ रहा है कि स्वतंत्रता दिवस जैसे महत्वपूर्ण राष्ट्रीय पर्व के कार्यक्रम में ध्वजारोहण से पहले राष्ट्रीय ध्वज की स्थिति की जांच क्यों नहीं की गई। इतनी बड़ी लापरवाही कैसे हुई और इसके लिए जिम्मेदारी किसकी है, इसे लेकर भी सवाल खड़े हो रहे हैं।

प्रशासन और विधायक के विरुद्ध परिवाद

: राष्ट्रीय ध्वज को कथित तौर पर उल्टा फहराए जाने के मामले को लेकर नवलगढ़ थाने में प्रशासन और विधायक के विरुद्ध परिवाद प्रस्तुत किया गया है। परिवाद में आरोप लगाया गया है कि नवलगढ़ विधायक, निवासी जाखल, जिला झुंझुनूं, ने जानबूझकर भारत के राष्ट्रीय ध्वज का अपमान किया। परिवाद में कहा गया है कि इस कृत्य से क्षेत्र में वैमनस्यता फैलने और शांति भंग होने की आशंका है। शिकायतकर्ता ने कहा कि घटना से उसकी तथा आमजन की राष्ट्र के प्रति भावनाएं आहत हुई हैं। परिवाद में मामले में प्राथमिकी दर्ज कर आरोपियों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की मांग की गई है। अब लोगों की नजर प्रशासन की जांच और आगामी कार्रवाई पर है।

जम्मू-कश्मीर की समस्याओं का समाधान केंद्र सरकार करेगी, अमेरिका नहीं : उमर

श्रीनगर। भारत में अमेरिका के राजदूत सर्जियो गोर के दौरे से पहले मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने बुधवार को कहा कि जम्मू-कश्मीर के मुद्दों को अमेरिकी सरकार नहीं, बल्कि भारत सरकार ही सुलझाएगी और वह इस संघ शासित प्रदेश को लेकर किसी विदेशी राजनयिक के समक्ष कोई शिकायत नहीं करेंगे।

श्री अब्दुल्ला ने जोर देकर कहा कि वह केंद्र शासित प्रदेश की समस्याओं के बारे में किसी विदेशी राजनयिक से शिकायत नहीं करेंगे। श्री गोर दक्षिण और मध्य एशिया के लिए अमेरिका के विशेष दूत भी हैं। वह आज श्रीनगर पहुँचने वाले हैं और यहां रात्रि प्रवास के बाद गुरूवार को लद्दाख रवाना होंगे।

श्री उमर ने विकास परियोजनाओं का निरीक्षण करने और ज़रूरी नागरिक कार्यों की प्रगति का जायज़ा लेने के बाद संवाददाताओं से कहा कि वह अमेरिकी राजदूत से मिलने के लिए उत्सुक हैं, लेकिन उन्होंने साफ़ कर दिया कि वह जम्मू-कश्मीर से जुड़े मामलों में बाहरी दखल नहीं चाहेंगे।

मुख्यमंत्री ने कहा, लंबे समय बाद अमेरिका का कोई राजदूत जम्मू-कश्मीर आ रहा है और मैं भी बहुत लंबे समय बाद किसी अमेरिकी राजदूत से मिल रहा हूँ। उन्हें आने दीजिए। हम उनसे बात करेंगे। उन्होंने कहा कि वह उनके विचार जानने के लिए उत्सुक हैं। उन्होंने कहा, मैं उनसे और बातें सुनना चाहूँगा, लेकिन वह भी सुनने आ रहे हैं। देखते हैं कि हमारी बातचीत कैसी होती है।

श्री उमर ने कहा कि बातचीत केंद्र शासित प्रदेश में मौजूदा हालात पर केंद्रित होगी।

उन्होंने कहा, वह सुनें या न सुनें, हमारी समस्याओं का उनसे कोई लेना-देना नहीं है। किसी दूसरे देश के राजदूत से शिकायत करना मेरी आदत नहीं है। अमेरिका हमारी समस्याओं का समाधान नहीं करेगा। केंद्र सरकार को ही हमारी समस्याओं का समाधान करना होगा। किसी दूसरे देश के राजदूत से शिकायत करना गलत होगा। मैं जम्मू-कश्मीर और हमारे हालात के बारे में बात करूंगा, लेकिन शिकायत नहीं करूंगा।

चंडीगढ़ में बारिश के बाद पर धंसी जमीन, प्रशासन की तैयारियों पर सवाल

चंडीगढ़। चंडीगढ़ में मंगलवार शाम हुई तेज बारिश के बाद जलभराव और सड़क धंसने की समस्या ने प्रशासन की तैयारियों पर सवाल खड़े कर दिए हैं। सेक्टर-28 और सेक्टर-26 की डिवाइडिंग रोड पर बारिश के बाद जमीन धंसने से सड़क पर बड़ा गड्ढा हो गया। यह मार्ग शहर के प्रमुख और व्यस्त रास्तों में शामिल है, जहां अक्सर वीवीआईपी मूवमेंट भी रहती है।

पंचकूला की ओर से आने वाले लोग पीजीआई, पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय तथा सेक्टर-17 स्थित सचिवालय सहित अन्य महत्वपूर्ण स्थानों तक पहुंचने के लिए इस मार्ग का इस्तेमाल करते हैं। ऐसे में सड़क के धंसने की घटना ने यातायात व्यवस्था और सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ा दी है।

गौरतलब है कि मानसून सीजन से पहले चंडीगढ़ प्रशासन की ओर से जलभराव और बारिश से जुड़ी समस्याओं को लेकर कई बैठकें की गई थीं। इसके बावजूद तेज बारिश के बाद प्रमुख सड़कों पर जलभराव और सड़क धंसने की घटनाएं सामने आने से प्रशासन की तैयारियों पर सवाल उठ रहे हैं।

कल की बारिश के बाद शहर के कई हिस्सों में भारी जलभराव देखने को मिला। कई वाहन पानी में फंसे नजर आए। सेक्टर-22 के मोबाइल मार्केट और आसपास के शोरूमों में भी बारिश का पानी भर गया। शहर की कई प्रमुख सड़कें जलमग्न नजर आईं।

मौसम विभाग ने पहले ही आने वाले दिनों में भारी बारिश की चेतावनी जारी की थी, जिसके बाद अब प्रशासन के सामने जलभराव से निपटने और सड़कों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की चुनौती बढ़ गई है।

जौहर विश्वविद्यालय समेत आजम खां से जुड़े कई ठिकानों पर ईडी की छापेमारी

लखनऊ/रामपुर। समाजवादी पार्टी (सपा) के वरिष्ठ नेता और महासचिव आजम खां तथा उनके ड्रीम प्रोजेक्ट मोहम्मद अली जौहर विश्वविद्यालय पर एक बार फिर प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने शिकंजा कस दिया है।

बुधवार सुबह ईडी की टीमों ने रामपुर स्थित जौहर विश्वविद्यालय और मौलाना मोहम्मद अली जौहर ट्रस्ट से जुड़े परिसरों समेत उत्तर प्रदेश के सहारनपुर और दिल्ली में करीब 10 ठिकानों पर एक साथ छापेमारी शुरू की। यह कार्रवाई धन शोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए), 2002 की धारा 17 के तहत की जा रही है। यह जांच जौहर ट्रस्ट और विश्वविद्यालय से जुड़े धन शोधन मामले में की जा रही है।

जांच का संबंध निजी ठेकेदारों के माध्यम से सरकारी ठेकों की धनराशि के दुरुपयोग और उसके बाद उस धन के इस्तेमाल से जुड़ा है। एजेंसी विश्वविद्यालय और ट्रस्ट की संपत्तियों के निर्माण से संबंधित वित्तीय लेनदेन की भी पड़ताल कर रही है। जांच में कुछ ठेकेदारों और ट्रस्ट के बीच वित्तीय लेनदेन सामने आने की बात कही गई है। आरोप है कि सरकारी ठेके हासिल करने वाले कुछ ठेकेदारों ने ट्रस्ट और विश्वविद्यालय को बड़े पैमाने पर दान, निर्माण कार्य और अन्य सुविधाओं के रूप में लाभ पहुंचाया।

ईडी की कार्रवाई का उद्देश्य इन लेनदेन से जुड़े वित्तीय रिकॉर्ड, दस्तावेज और डिजिटल साक्ष्य जुटाना तथा सरकारी धन के इस्तेमाल और उसके रास्ते का पता लगाना है। सूत्रों के मुताबिक, छापेमारी के दौरान ईडी की टीम ने विश्वविद्यालय परिसर से कई महत्वपूर्ण दस्तावेज और अभिलेख अपने कब्जे में लिए हैं। एजेंसी इससे पहले भी जौहर विश्वविद्यालय में कार्रवाई कर चुकी है।आजम खां वर्तमान में विभिन्न मामलों में सजा के बाद जेल में हैं। ताजा कार्रवाई के बाद उनके समर्थकों और करीबियों में भी हलचल बढ़ गई है।

हनुमानगढ़ जिले में अपराधियों की 8 करोड़ से अधिक की संपत्ति फ्रीज की

श्रीगंगानगर। हनुमानगढ़ जिले में पुलिस ने अपराधियों के खिलाफ कार्रवाई करते हुए मात्र एक माह के भीतर 8 करोड़ रुपये से अधिक की संपत्ति फ्रीज की है। पुलिस की इस कार्रवाई से अपराध जगत में खलबली मच गई है।

जानकारी के अनुसार, फ्रीज की गई संपत्तियों में बड़ी संख्या ऐसे आरोपितों और उद्घोषित अपराधियों की बताई जा रही है, जिनके खिलाफ एनडीपीएस एक्ट सहित विभिन्न आपराधिक मामलों में कार्रवाई चल रही है। पुलिस ने अपराध से अर्जित संपत्ति पर कार्रवाई को लेकर अभियान तेज किया है।

कार्यभार संभालने के बाद से ही हनुमानगढ़ पुलिस अधीक्षक बी. आदित्य अपराधियों की संपत्तियों की जानकारी जुटाकर उनके खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई करवा रहे हैं।

पुलिस का फोकस विशेष रूप से मादक पदार्थों की तस्करी से जुड़े आरोपितों और लंबे समय से फरार उद्घोषित अपराधियों की अवैध रूप से अर्जित संपत्ति पर है।

पुलिस की लगातार हो रही कार्रवाई से अपराधियों में चिंता बढ़ी है। पुलिस का कहना है कि अपराध से अर्जित संपत्ति के खिलाफ कार्रवाई आगे भी जारी रहेगी और आपराधिक गतिविधियों में लिप्त लोगों की आर्थिक कमर तोड़ने के लिए प्रभावी कदम उठाए जाएंगे।

जोड़कियां गांव में पीट-पीटकर अधेड़ की हत्या

हनुमानगढ़। जंक्शन थाना क्षेत्र के जोड़कियां गांव में पारिवारिक जमीन विवाद को लेकर एक अधेड़ की लाठी-डंडों से पीट-पीटकर हत्या किए जाने का मामला सामने आया है। मृतक की पहचान रामकुमार के रूप में हुई है।

जानकारी के अनुसार, रामकुमार सुबह खेत की ओर जा रहा था। इसी दौरान उस पर लाठी-डंडों से हमला कर दिया गया। गंभीर रूप से घायल रामकुमार की मौत हो गई। घटना के बाद क्षेत्र में सनसनी फैल गई।

मामले में मृतक के चाचा पर हत्या के आरोप लगाए गए हैं। आरोप है कि जमीन विवाद को लेकर रंजिश के चलते बाहर से कुछ लोगों को बुलाकर रामकुमार पर हमला करवाया गया। मृतक और उसके चाचा के बीच पारिवारिक जमीन को लेकर विवाद चल रहा था।

घटना की सूचना मिलने पर जंक्शन पुलिस मौके पर पहुंची और मामले की जांच शुरू की। पुलिस ने मामले में पिता-पुत्र को हिरासत में लिया है और उनसे पूछताछ की जा रही है।

पुलिस ने मृतक के शव को जिला चिकित्सालय की मोर्चरी में रखवाया है। हत्या के वास्तविक कारणों और घटना में शामिल अन्य लोगों की भूमिका की जांच की जा रही है। पुलिस का कहना है कि जांच के बाद ही मामले की पूरी स्थिति स्पष्ट हो सकेगी।

संपादकीय

'विकसित भारत' का रोडमैप

आज़ादी के 8 दशकों में भारत ने प्रगति की मजबूत नींव रखी है। लालकिले से 2047 तक विकसित भारत के संकल्प और 'शक्ति की सप्तधारा' के साथ देश चुनौतियों को पार कर वैश्विक पटल पर नई पहचान बना रहा है। इसमें कोई दोराय नहीं कि देश को आजादी मिलने के बाद बीते करीब आठ दशक का सफर जहां बहुस्तरीय विकास का जीवंत उदाहरण है, वहीं इस दौरान लोगों ने बहुत सारे उतार-चढ़ाव भी देखे। मगर इस सबके बीच एक संकल्प कायम रहा कि जिन तूफानों और मुश्किलों का सामना करके देश ने स्वतंत्रता हासिल की थी, उसकी गरिमा को कायम रखना और भविष्य को ज्यादा बेहतर बनाना सभी का दायित्व है।इसमें आमतौर पर सभी नागरिकों ने अपने स्तर पर अपनी सीमा में हर संभव योगदान दिया है और इसे कर्तव्य की तरह निभाया है। यही वजह है कि हर वर्ष स्वतंत्रता दिवस पर आजादी के आंदोलन को याद करते हुए देश के पास संतोष और उल्लास के साथ न केवल एक सुनहरे भविष्य का सपना होता है, बल्कि उसे जमीन पर उतारने का हौसला भी दिखता है।आबादी के ज्यादातर हिस्से के पास विकास की रोशनी पहुंचाने के लिए अलग-अलग दौर की सरकारों ने जिस स्तर पर काम किया, उसे बहुत जटिल संघर्षों के बाद मिली स्वतंत्रता की गरिमा और सपने को नया आयाम देने के प्रयासों के तौर पर देखा जा सकता है।यों देश की उपलब्धियों को आजादी की लड़ाई के नायकों की भूमिका के आईने में देखना स्वाभाविक ही है, लेकिन हर

वर्ष स्वतंत्रता दिवस के मौके पर संघर्ष की संवेदना को महसूस करने की अपनी अहमियत है। इस वर्ष भी यह उत्साह देश के अलग-अलग राज्यों में हर जगह दिखा। जाहिर है, इस अवसर पर जहां अतीत की उपलब्धियों को याद करना एक औपचारिक, लेकिन संवेदना से जुड़ा अध्याय है, वहीं भविष्य की बेहतरी के संकल्प भी जरूरी हिस्सा हैं।इसी संदर्भ में दिल्ली में लालकिले से प्रधानमंत्री ने भी एक बार फिर वक्त के सुनहरे अध्यायों को याद करते हुए देश को एक बेहतर भविष्य की दिशा में आगे ले जाने का संकल्प दोहराया। उनकी इस बात का अपना महत्त्व है कि देश के विकास के लिए बड़े सपने सोच का विस्तार करते हैं और दृढ़ संकल्प होने पर कठिनाइयों और आपदाओं के बीच से रास्ते निकालने की सामर्थ्य अपने आप सामने आती है।उन्होंने महिलाओं, युवाओं, किसानों, गरीब और मध्यवर्ग के परिवारों को साथ लेकर 2047 तक विकसित भारत बनाने के संकल्प को दोहराया। विधानसभा और लोकसभा में महिलाओं के लिए तैंतीस फीसद आरक्षण लागू करने के लिए सभी राजनीतिक दलों का आह्वान करने के साथ-साथ उन्होंने विकसित भारत बनाने के लिए 'शक्ति की सप्तधारा' का दृष्टिकोण भी साझा किया।दरअसल, यह देश की आत्मा में बसे उस जीवट का संकेत है, जिसका उदाहरण समय-समय पर दुनिया ने देखा है। यह सही है कि आज भी देश के सामने विकास की कसौटियों के समांतर अनेक जटिलताएं और चुनौतियां मुंह बाए खड़ी हैं, लेकिन इन सबके बीच सामान्य स्थितियों से लेकर बेहद संवेदनशील और संकट जैसे हालात में भी लोगों ने धीरज के साथ देश की गति को बनाए रखने में अपना योगदान दिया है, जो वक्त के दस्तावेज में दर्ज होता रहा है।हालांकि आज भी सीमा पार और कई बार आंतरिक मोर्चों से मिलती चुनौतियां नई रणनीति के तकाजे की जरूरत को रेखांकित करती रही हैं, लेकिन देश ने अपना सफर जारी रखा है। यह बेवजह नहीं है कि आधुनिक तकनीक और दुर्लभ खनिजों के मामले में आज दुनिया भारत की ओर देख रही है। इसलिए यह उम्मीद स्वाभाविक है कि आजादी के बाद अब तक देश में जो मजबूत नींव तैयार हुई है, उस पर विकास की नई इबारत लिखी जाएगी।

पहनावा निजी पसंद, समाज को हस्तक्षेप का हक नहीं

महिलाओं के पहनावे का चयन उनका व्यक्तिगत निर्णय है। दिल्ली हाईकोर्ट ने स्पष्ट किया कि निजता और स्वतंत्रता का सम्मान करते हुए समाज को लड़कियों को टोकने के बजाय लड़कों का आचरण सुधारना चाहिए। इसमें कोई दोराय नहीं कि देश को आजादी मिलने के बाद बीते करीब आठ दशक का सफर जहां बहुस्तरीय विकास का जीवंत उदाहरण है, वहीं इस दौरान लोगों ने बहुत सारे उतार-चढ़ाव भी देखे। मगर इस सबके बीच एक संकल्प कायम रहा कि जिन तूफानों और मुश्किलों का सामना करके देश ने स्वतंत्रता हासिल की थी, उसकी गरिमा को कायम रखना और भविष्य को ज्यादा बेहतर बनाना सभी का दायित्व है।इसमें आमतौर पर सभी नागरिकों ने अपने स्तर पर अपनी सीमा में हर संभव योगदान दिया है और इसे कर्तव्य की तरह निभाया है। यही वजह है कि हर वर्ष स्वतंत्रता दिवस पर आजादी के आंदोलन को याद करते हुए देश के पास संतोष और उल्लास के साथ न केवल एक सुनहरे भविष्य का सपना होता है, बल्कि उसे जमीन पर उतारने का हौसला भी दिखता है।आबादी के ज्यादातर हिस्से के पास विकास की रोशनी पहुंचाने के लिए अलग-अलग दौर की सरकारों ने जिस स्तर पर काम किया, उसे बहुत जटिल संघर्षों के बाद मिली स्वतंत्रता की गरिमा और सपने को नया आयाम देने के प्रयासों के तौर पर देखा जा सकता है।यों देश की उपलब्धियों को आजादी की लड़ाई के नायकों की भूमिका के आईने में देखना स्वाभाविक ही है, लेकिन हर वर्ष स्वतंत्रता दिवस के मौके पर संघर्ष की संवेदना को महसूस करने की अपनी अहमियत है। इस वर्ष भी यह उत्साह देश के अलग-अलग राज्यों में हर जगह दिखा। जाहिर है, इस अवसर पर जहां अतीत की उपलब्धियों को याद करना एक औपचारिक, लेकिन संवेदना से जुड़ा अध्याय है, वहीं भविष्य की बेहतरी के संकल्प भी जरूरी हिस्सा हैं।इसी संदर्भ में दिल्ली में लालकिले से प्रधानमंत्री ने भी एक बार फिर वक्त के सुनहरे अध्यायों को याद करते हुए देश को एक बेहतर भविष्य की दिशा में आगे ले जाने का संकल्प दोहराया। उनकी इस बात का अपना महत्त्व है कि देश के विकास के लिए बड़े सपने सोच का विस्तार करते हैं और दृढ़ संकल्प होने पर कठिनाइयों और आपदाओं के बीच से रास्ते निकालने की सामर्थ्य अपने आप सामने आती है।उन्होंने महिलाओं, युवाओं, किसानों, गरीब और मध्यवर्ग के परिवारों को साथ लेकर 2047 तक विकसित भारत बनाने के संकल्प को दोहराया। विधानसभा और लोकसभा में महिलाओं के लिए तैंतीस फीसद आरक्षण लागू करने के लिए सभी राजनीतिक दलों का आह्वान करने के साथ-साथ उन्होंने विकसित भारत बनाने के लिए 'शक्ति की सप्तधारा' का दृष्टिकोण भी साझा किया।दरअसल, यह देश की आत्मा में बसे उस जीवट का संकेत है, जिसका उदाहरण समय-समय पर दुनिया ने देखा है। यह सही है कि आज भी देश के सामने विकास की कसौटियों के समांतर अनेक जटिलताएं और चुनौतियां मुंह बाए खड़ी हैं, लेकिन इन सबके बीच सामान्य स्थितियों से लेकर बेहद संवेदनशील और संकट जैसे हालात में भी लोगों ने धीरज के साथ देश की गति को बनाए रखने में अपना योगदान दिया है, जो वक्त के दस्तावेज में दर्ज होता रहा है।

आज का कार्टून

फिर भी जमीन के हक से दूर महिला किसान

संयुक्त राष्ट्र ने महिलाओं के कृषि एवं बागवानी के कार्यों में महत्त्व को मान्यता देने और लैंगिक असमानता को खत्म करने के लिए वर्ष 2026 को अंतरराष्ट्रीय महिला किसान वर्ष के रूप में मनाए जाने की घोषणा की है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार, देश में महिलाओं की आबादी 48.4 फीसद है, इसके बावजूद खेती और बागवानी में उनकी आधे से भी अधिक की भागीदारी है।

मनीष अग्रहरि

ग्रामीण महिलाएं दैनिक श्रमसाध्य पारिवारिक जिम्मेदारियों के निर्वहन के साथ-साथ बागवानी से जुड़े कार्यों में 79 फीसद तथा खेती में लगभग 75 फीसद सक्रिय हिस्सेदारी करती हैं, फिर भी यह कटु सत्य है कि किसान तो पुरुष ही कहलाता है। जब भी किसान की बात आती है, तो हम सबके मन-मस्तिष्क में प्राय-पुरुष किसान ही उभरता है।

ऐसे विरोधाभास में संयुक्त राष्ट्र की पहल पर सरकार और समाज को देश की महिला किसानों के उत्थान के लिए संजीदगी से विचार करना होगा, क्योंकि आज भी वास्तविकता से हटकर पूरी दुनिया में महिला किसानों के महत्त्वपूर्ण योगदान के बावजूद उनके कार्यों को हाशिये पर रखा जाता है।

देश में उदारीकरण, निजीकरण और औद्योगीकरण के बाद पुरुषों का गांवों से पलायन बढ़ा है। ऐसे में महिलाओं ने रोजमर्रा के घरेलू कार्यों के साथ-साथ कृषि एवं संबद्ध कार्यों में सक्रिय भागीदारी निभानी शुरू की है। आज यंत्रीकरण के बावजूद धान की रोपाई करते हुए आमतौर पर महिलाएं ही देखी जाती हैं। इसके अलावा वे सारे कार्य जो खेती में श्रम प्रधान हैं, जैसे- बुआई, गुड़ाई, कटाई, ओसाई, भंडारण, प्रसंस्करण तथा चारा उत्पादन, ये सभी सर्वाधिक महिलाओं के खाते में ही दर्ज होते हैं।

मत्स्य पालन, पशुपालन और बागवानी में भी कमोबेश यही स्थिति है। इसके बावजूद राजस्व अभिलेखों में इनका अदृश्य होना अनेक सवाल खड़ा करता है। वर्ष 2023-24 के आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण के अनुसार, देश में प्रत्येक तीन में से दो ग्रामीण महिलाएं कृषि समुदाय का हिस्सा हैं। उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे राज्यों में अस्सी फीसद महिलाएं कृषि में संलग्न है।

इसी तरह लोकसभा में दी गई सूचना के अनुसार, महिला कृषि श्रमिकों की संख्या में लगातार बढ़ोतरी हो रही है, तो दूसरी तरफ पुरुष कृषि श्रमिकों में गिरावट देखने को मिल रही है। जनगणना-2011 के आंकड़ों के अनुसार, देश में 3.6 करोड़ महिला किसान तथा 6.15 करोड़ महिला कृषि श्रमिक हैं। इस तरह, कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों में महिलाओं की बड़ी भागीदारी होने के बावजूद उन्हें पूरे हक-हकूक नहीं मिल पा रहे हैं।

यही कारण है कि महिला किसानों और श्रमिकों की इतनी बड़ी आबादी होने के बावजूद तकरीबन चौदह फीसद महिला किसानों का नाम ही कृषि योग्य भूमि एवं राजस्व अभिलेख में अंकित है। इसी तरह महिला कृषि श्रमिकों के नाम महज दो फीसद ही हैं। वर्ष 2019 में शुरू की गई प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के अनुसार, पंजाब जैसे समृद्ध राज्य में महिलाओं के नाम अभी भी कृषि योग्य भूमि पर मात्र एक फीसद ही दर्ज हैं।

ऐसा नहीं है कि खेती में महिलाओं की हकदारी में असमानता सिर्फ भारत में ही है, बल्कि पूरी दुनिया में उनके नाम खेत का स्वामित्व न होना एक बड़ा विभेद खड़ा करता है। एक अनुमान के मुताबिक, विकासशील देशों में आधी से अधिक आबादी खेती में संलग्न है, मगर भूमि का स्वामित्व सिर्फ पंद्रह फीसद महिलाओं के पास ही है। इस तरह कृषि के क्षेत्र में पूरी दुनिया में लैंगिक असमानता कायम है।

देश में महिला किसानों की तरक्की में सबसे बड़ा रोड़ा अभिलेखजनित असमानता ही है, क्योंकि खेती योग्य भूमि का स्वामित्व (खसरा, खतौनी में नाम) न होने के कारण अनेक प्रकार की सरकारी योजनाओं और औपचारिक वित्तीय लाभ खासतौर से किसान क्रेडिट कार्ड एवं सरकारी अनुदान से महिलाएं कोसों दूर हो जाती हैं। लागत को घटाने के लिए इस समय कृषि यंत्रों पर जोर है, मगर महिलाओं के अनुकूल कृषि यंत्र बहुत कम उपलब्ध हैं। सरकार को इस मसले पर भी गंभीरता से विचार करना चाहिए।

महिलाएं देश, समाज और परिवार के लिए कितना योगदान दे रही हैं, उसे आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण के आंकड़ों से समझा जा सकता है। इसके अनुसार, महिलाएं चूल्हा-चौका, बच्चों के पालन-पोषण समेत अन्य घरेलू कार्यों के दबाव के चलते तकरीबन ढाई गुना से अधिक समय अवैतनिक कार्यों में गुजार देती हैं। इससे उनका बाजार उन्मुखीकरण और उच्च मूल्य वाले कार्यों में भागीदारी मूल्य श्रृंखला में सबसे ऊपर होने की संभावना सर्वाधिक न्यून हो जाती है।

संविधान का अनुच्छेद-14 सभी को समानता का अधिकार देता है, इससे महिलाओं को सामान कार्य का सामान मेहनताना मिलना चाहिए। मगर संवैधानिक व्यवस्था से इतर महिलाओं को व्यावहारिक रूप से पुरुषों की अपेक्षा कृषि कार्यों का मेहनताना कम दिया जाता है। इसी प्रकार अनुच्छेद-21 गरिमापूर्ण जीवन की गारंटी देता है, मगर कृषि क्षेत्र के असंगठित होने के कारण कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न की शिकायतों का निवारण, प्रतिषेध और प्रतितोष अधिनियम, 2013 भी लागू नहीं हो पाता है। केवल संगठित और बड़े कार्यस्थलों में ही यह मूर्त रूप ले पाता है। इससे खेती आधारित गतिविधियों में कई बार महिलाएं यौन उत्पीड़न और हिंसा की शिकार हो जाती हैं और न्याय के लिए उन्हें दर-दर भटकना पड़ता है। ऐसे में संविधान प्रदत्त गरिमापूर्ण जीवन और समानता की बात कल्पना से परे है।

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के अधीन कार्य करने वाली कृषि अनुसंधान एवं प्रसार की सर्वोच्च संस्था भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने महिला किसानों के उत्थान के लिए वर्ष 1996 में भुवनेश्वर में केंद्रीय महिला कृषि संस्थान की स्थापना की थी। इसका उद्देश्य कृषि में महिलाओं के अनुरूप तकनीक और आजीविका पर केंद्रित अनुसंधान करना है। इसी प्रकार स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से वित्तीय समावेशन बढ़ा है, नमो ड्रोन दीदी योजना से हुनरमंद महिलाएं तरक्की की नई इबारत लिख रही हैं, लखपति दीदी योजना से भी लाभ हो रहा है। इसके अलावा राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन, नाबार्ड और राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंधन संस्थान के संयुक्त सहयोग से एग्री क्लीनिक और एग्री बिजनेस सेंटर योजना के माध्यम से महिला कृषि उद्यमी तैयार हो रही हैं।

इसी तरह कृषि अवसंरचना कोष समेत अनेक योजनाएं आज संचालित हो रही हैं। फिर भी वास्तविक किसान के रूप में जमीन का मालिकाना हक न मिल पाने के कारण दिन-रात खेत में कार्य करने वाली महिला किसानों को नवाचारों में निर्णय लेने की शक्ति, कृषि उत्पादों में सौदेबाजी, संस्थागत कर्ज लेने और सबसिडी की सुविधा नहीं मिल पाती है। अब यह समय की मांग है कि सरकार, निजी संस्थाएं और समाज तीनों मिलकर महिला किसानों को खेती जैसे महत्त्वपूर्ण संसाधन के हक-हकूक दिलाने के लिए नीतिगत निर्णय के साथ उन्हें समान अधिकार और सम्मान दिलाएं। महिलाओं को कृषि के लिए औपचारिक शिक्षा, कौशल विकास और वित्तीय साक्षरता की दिशा में अग्रसर करने के लिए हरसंभव प्रयास किए जाने चाहिए, ताकि देश और दुनिया की पोषण-रक्षा, उत्पादकता एवं अर्थव्यवस्था में सही मायने में उनकी भागीदारी सुनिश्चित की जा सके।

झारखंड में 'परीक्षा सुधार' पर आंदोलन के बीस दिन। इस दौरान छात्र अहिंसक रहे और रोज पिटे। छह सौ गिरफ्तार हुए, मामले भी बने। भाजपा ने समर्थन में बंद रखा, लेकिन बाकी से मिला सिर्फ सिद्धांत कथन कि हम किसी पर भी हिंसा का समर्थन नहीं करते। केंद्र ने मांगें मानीं, लेकिन झारखंड के छात्रों की सीबीआइ की जांच की मांग किसने मानी?

साधारणता में छिपा है असली सौंदर्य

हम अक्सर सुंदरता की परिभाषा बड़ी चीजों, असाधारण चिह्नों और भव्य दृश्यों से जोड़ लेते हैं। चमकीली रोशनी से सजी इमारतें, महंगे पोशाक-परिधान और सोशल मीडिया पर खूब प्रचारित होने वाली तस्वीरें- ये सभी मन में सुंदरता का एक विशेष और ऊंचा मानक स्थापित कर देते हैं। मगर हम ध्यान से देखें तो जीवन की सबसे ठोस, स्थायी और दिल को छू लेने वाली सुंदरता अक्सर साधारण, सामान्य और रोजमर्रा की चीजों में छिपी होती है। साधारण के भीतर छिपा यह सौंदर्य न सिर्फ दिखता है, बल्कि महसूस भी होता है। यह हमें ज्यों का त्यों रहने और सरलता में आनंद लेने की प्रेरणा देता है।

अविनाश जोशी

यह समझना जरूरी है कि 'साधारण' का अर्थ दुर्बल या निम्न नहीं होता। साधारण का तात्पर्य है सरलता, अप्रतिष्ठा और स्वाभाविकता- ऐसी चीजें जो बेझिझक, बिना सजावट के और वास्तविक रूप में मौजूद रहती हैं। एक खेत में खड़ी सरसों की पीली लहर, आम के बाग में मौसम का मीठा फल या एक बरसाती सड़क पर चलती साइकिल- ये तमाम दृश्य किसी भी समय हमें सहजता से आनंद दे सकते हैं। इनके सामने चमक-दमक की आभा अस्थायी और सतही लगती है, क्योंकि साधारण चीजों का आकर्षण सच्चाई और अनुराग से जुड़ा होता है, न कि दिखावे से। साधारणता की सुंदरता का एक बड़ा कारण उसकी प्रामाणिकता है। जब कोई वस्तु या अनुभव सजावट, दिखावे या बनावटीपन से मुक्त होता है, तब वह अपनी असली पहचान प्रकट करता है। प्रामाणिकता का अर्थ है कि चीजें जैसे हैं, वैसी ही स्वीकार की जाएं। यह स्वीकार्यता हमें गहरा संतोष देती है। साधारण रिश्ते, जो दिखावे के बजाय समझदारी, भरोसे और साधारण सहायक भावों पर टिकी हों, वे अक्सर सबसे मजबूत व टिकाऊ होते हैं। हर सफल दोस्ती या पारिवारिक संबंध के पीछे रोजमर्रा की छोटी-छोटी परवाह व साझा किए गए अनुभव होते हैं, जो दिखने में साधारण पर व्यवहार में गहरे होते हैं। सदियों से भारतीय संस्कृति में साधारणता की महत्ता पर जोर दिया गया है। हमारे ऋषि-मुनि, संत और साधु साधारण जीवन को अहम मानते रहे हैं, क्योंकि वे जानते थे कि कम चीजों के साथ जीना मन के लिए शांति का मार्ग खोलता है। अधिक की लालसा मन को बेचैन कर देती है, जबकि साधारणता में संतोष और आत्मसंतुष्टि होती है। लोक जीवन की कला, हस्तशिल्प और ग्रामीण संस्कृति में भी यही सौंदर्य निहित है। हाथों से बनी मिट्टी के बर्तन, बुनकरों के कपड़े, गांव की सादगी- ये सब हमें अपनी जड़ों से जोड़ते हैं और अस्तित्व के अर्थ की याद दिलाते हैं। जब हम सरल जीवन अपनाते हैं, कम वस्तुओं का उपभोग, स्थायी और स्थानीय उत्पादों का उपयोग करते हैं, तो हम पर्यावरण पर दबाव कम करते हैं। बड़े पैमाने पर उत्पादन और भोग-विलास ने न केवल प्राकृतिक संसाधनों को खत्म किया है, बल्कि मानसिक असंतोष और प्रतिस्पर्धा की भावना बढ़ाई है। साधारण जीवनशैली अपनाने से हम संसाधनों का सम्मान करते हुए संतुलन बनाए रख सकते हैं। इसके अलावा, साधारणता का अर्थ सामाजिक समानता को भी बढ़ावा देना हो सकता है। जब हम दिखावे के बजाय गुणवत्ता और संबंधों को महत्त्व दें, तो समाज में दिखावे के कारण बनने वाले विभाजन कम होते हैं। व्यक्तिगत जीवन में साधारणता अपनाने का अर्थ केवल भौतिक वस्तुओं की कटौती नहीं है, बल्कि मानसिक सरलीकरण भी है। आज हम अनेक अपेक्षाओं, योजनाओं व तनावों से घिरे रहते हैं। साधारण जीवन का अभ्यास दिनचर्या में छोटे-छोटे बदलाव, अनावश्यक शोर को कम करना, प्राथमिकताओं का फिर से मूल्यांकन हमें मन की स्पष्टता देता है। सुबह की थोड़ी सैर, मोबाइल का समय सीमित करना और भोजन के समय पूरी तरह उपस्थित रहना- ये कदम भी जीवन की गुणवत्ता बदल देते हैं। जब मन शांत होता है, तब हम आसपास की साधारण सुंदरताओं को भी अधिक गहराई से देख पाते हैं। फिर भी, साधारणता का अर्थ आत्म-परित्याग नहीं है। यह तर्कसंगत ढंग से चुनने और उन चीजों को बनाए रखने का तरीका है, जो खुशी और अर्थ देती हैं। हर दिन कुछ मिनट निकालकर उन चीजों के लिए धन्यवाद करना, जैसे निरोग होना, परिवार की हंसी और प्रकृति की उपस्थिति हमें यह याद दिलाती है कि जीवन की असल खुशियां दिखावे से नहीं, बल्कि अनुभवों और रिश्तों से आती हैं।

आभार का अभ्यास दृष्टिकोण को बदल देता है। वही दिन, जो पहले बेमायने थे, साधारणता की दृष्टि से समृद्ध और सुंदर लगने लगता है। हमारे समाज में आधुनिकता और पारंपरिकता के बीच एक संतुलन बनाना आवश्यक है। आधुनिक सुविधाएं और विज्ञान हमारी जिंदगी को सरल और सुविधाजनक बना सकते हैं, मगर उन सुविधाओं का उपयोग तभी सार्थक है, जब हम उन्हें साधारण जीवन के सिद्धांतों के साथ जोड़ते हैं। तकनीक और साधारणता विरोधी नहीं हैं। वे मिलकर बेहतर जीवन का आधार बन सकते हैं। 'जो साधारण है वही सुंदर है'- यह विचार हमें एक गहरी मानवीय सच्चाई की ओर ले जाता है कि वास्तविक खुशी और सुंदरता बाहरी दिखावे में नहीं, बल्कि अंदरूनी शांति, ईमानदारी और संबंधों की सरलता में है। साधारण होना हमें जीवन की असली परतों से जुड़ने का अवसर देता है। रिश्तों की गर्माहट, प्रकृति की सहजता, और स्वयं के प्रति सच्चाई।

जब हम साधारण को अपनाते हैं, तब हमारे देखने का ढंग बदल जाता है। छोटे-छोटे पल भी उत्सव बन जाते हैं और जीवन का हर क्षण पूर्णता से भरपूर दिखता है। यही साधारणता की परम स्वतःस्फूर्त सुंदरता है- स्थायी, सहज और सबके लिए सुलभ। किसी बच्चे के जीवन में भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं होती, बल्कि वह उसके सोचने, समझने और संसार को पहचानने की पहली खिड़की भी होती है। जन्म के बाद बच्चा जिस भाषा में अपने माता-पिता से स्नेह पाता है, अपने आसपास की वस्तुओं को पहचानता है और अपने विचार व्यक्त करना सीखता है, वही उसकी मातृभाषा होती है। इसलिए जब शिक्षा की शुरुआत उसी परिचित भाषा में होती है, तो सीखना बच्चे के लिए बोझ नहीं, बल्कि एक सहज और उत्साहजनक प्रक्रिया बन जाती है।

वैज्ञानिकों ने खोजा अरबों का खजाना!

प्लैटिनम, सोना जैसी बहुमूल्य धातुएं का बना है यह एस्टेरॉइड

ब्रह्मांड में कई अनसुलझे रहस्य हैं, जिन्हें सुलझाने में विज्ञान लगा हुआ है। लेकिन हमारा विज्ञान ऐसे रहस्यों तक भी पहुंच गया है, जिन्हें सुनकर आपके होश उड़ सकते हैं। वैज्ञानिकों ने एक ऐसा क्षुद्रग्रह खोजा है, जिसमें सोना, प्लैटिनम, निकल और लोहे जैसी बहुमूल्य धातुएं मिली हैं। इस एस्टेरॉइड का नाम 16 साईकी है, जिसे इटली के खगोलविद एनीबॉनी गैस्परिस ने खोजा था। 16 साईकी सौरमंडल में खोजा गया 16वां एस्टेरॉइड था, जिसकी वजह से इसका नाम 16 साईकी रखा गया। वैज्ञानिकों की मानें तो 16 साईकी पर मौजूद धातुओं की कीमत पूरी पृथ्वी की अर्थव्यवस्था से भी कई गुना अधिक हो सकती है। वैज्ञानिकों ने अनुमान लगाया है कि 16 साईकी पर मौजूद धातुएं बहुमूल्य हैं, जिनकी कीमत करीब 100 क्वाड्रिलियन डॉलर हो सकती है। यानी अगर इसे धरती पर लाया जा सके, तो धरती का हर व्यक्ति अमीर हो सकता है।

आखिर यह एस्टेरॉइड धातु से कैसे बना

यही वजह है कि इस मिशन को लेकर NASA कड़ी मेहनत कर रहा है। लेकिन यह समझना भी जरूरी है कि आखिर यह एस्टेरॉइड धातु से कैसे बना? आमतौर पर जो एस्टेरॉइड होते हैं, वे कार्बन, बर्फ और पत्थर से बने होते हैं। लेकिन इस एस्टेरॉइड पर धातुएं कैसे पहुंच गईं? वैज्ञानिकों ने अनुमान लगाया है कि 16 साईकी किसी पुराने ग्रह का कोर हो सकता है, जिसके चलते यह धातुओं का बना हो सकता है। 16 साईकी की बाहरी परत किसी बड़ी टक्कर के चलते अलग हो गई होगी, जिसके चलते यह ऐसा दिखता है। बता दें कि ग्रह बनने की शुरुआती अवस्था में जो धातुएं होती हैं, वे ग्रह के कोर में स्थित हो जाती हैं। शायद 16 साईकी भी किसी ग्रह का कोर रहा होगा।

क्या धरती पर लाया जा सकता है यह सोना?

अब सवाल यह है कि क्या इस बहुमूल्य, कीमती सोने को धरती पर लाया जा सकता है? दरअसल, यह लगभग नामुमकिन सा है, जिसके पीछे कई कारण हैं। सबसे बड़ा कारण है ब्रह्मांड की दूरी। जितना दूर यह एस्टेरॉइड है, उसे लाने के लिए अब तक ऐसी टेक्नोलॉजी विकसित नहीं हुई है। और अगर किसी तरह से इस सोने को धरती पर लाया भी जाए, तो सोने की कोई कीमत नहीं रह जाएगी और उसका महत्व खत्म हो जाएगा। वैज्ञानिकों द्वारा यह खोज की जा रही है कि आखिर यह ग्रह कैसे बना।

भारत के इस 4000 साल पुराने मंदिर की मूर्ति दबाने पर निकलता है रक्त!

150 सीढ़िया चढ़ जीवित भगवान के भक्त करते है दर्शन

4000 साल पुराना ये मंदिर 1500 फीट ऊंचे पहाड़ पर बसा है, जहां भगवान नरसिम्हा की स्वयंभू मूर्ति विराजमान है। भक्तों का मानना है कि मूर्ति जीवित है और इसे हल्का दबाने पर खून जैसा लाल द्रव निकलता है। मॉनसून में हजारों लोग 150 सीढ़ियां चढ़कर इस चमत्कार के दर्शन करने पहुंच रहे हैं। ये स्थान चारों तरफ हरियाली से घिरा है, और पहाड़ की शांति इसे आध्यात्मिक साधकों के लिए खास बनाती है। पुजारी मूर्ति पर चंदन का लेप लगाते हैं ताकि 'खून' को रोका जा सके। भक्तों का कहना है कि ये मूर्ति अपने आप प्रकट हुई थी, जिससे इसकी आस्था और गहरी हो जाती है। मंदिर का प्राकृतिक माहौल और रहस्यमयी कहानी इसे धार्मिक यात्रियों के लिए आकर्षण का केंद्र बनाती है।

स्वयंभू मूर्ति का अनोखा रहस्य

लक्ष्मी नरसिंह स्वामी मंदिर की मूर्ति की सबसे बड़ी खासियत है इसकी मुलायम बनावट। भक्तों का दावा है कि मूर्ति को हल्का दबाने पर उसमें गड्ढा बन जाता है, और ज्यादा दबाव पर लाल द्रव निकलता है, जिसे वे खून मानते हैं। पुजारी बताते हैं कि ये स्वयंभू मूर्ति है, जिसे किसी शिल्पी ने नहीं बनाया। इसे धरती से

अपने आप प्रकट हुआ माना जाता है। इस चमत्कार को देखने के लिए दूर-दूर से लोग आते हैं। वैज्ञानिक इसका कारण मूर्ति की सामग्री या प्राकृतिक रासायनिक प्रक्रिया मानते हैं, लेकिन भक्तों की आस्था अटल है।

मंदिर का इतिहास और महत्व

कहा जाता है कि ये स्थान 4000 साल पुराना है और भगवान नरसिम्हा की शक्ति का प्रतीक है। हिंदू मान्यताओं में नरसिम्हा को विष्णु का क्रोधी अवतार माना जाता है, जो बुराई का नाश करते हैं। यहाँ आने वाले भक्तों का विश्वास है कि यहां दर्शन करने से दुखों से मुक्ति मिलती है और मनोकामनाएं पूरी होती हैं। खासकर निःसंतान दंपतियों के लिए ये मंदिर आशा का केंद्र है। मॉनसून में सीढ़ियां चढ़ना चुनौतीपूर्ण हो सकता है, लेकिन भक्त इसे भक्ति का हिस्सा मानते हैं।

दर्शन का समय और सावधानियां

ये जगह सुबह 5 बजे से रात 8 बजे तक खुली रहती है। मॉनसून में बारिश के कारण सीढ़ियां फिसलन भरी हो सकती हैं, इसलिए मजबूत जूते पहनें। मूर्ति को छूने से पहले पुजारी की इजाजत जरूरी है, क्योंकि इसे पवित्र माना जाता है। फोटोग्राफी की अनुमति नहीं है, ताकि पवित्रता बनी रहे। वारंगल से इस जगह तक बस या टैक्सी से आसानी से पहुंचा जा सकता है। आसपास बुनियादी सुविधाएं जैसे खाने-पीने की दुकानें और विश्राम स्थल उपलब्ध हैं।

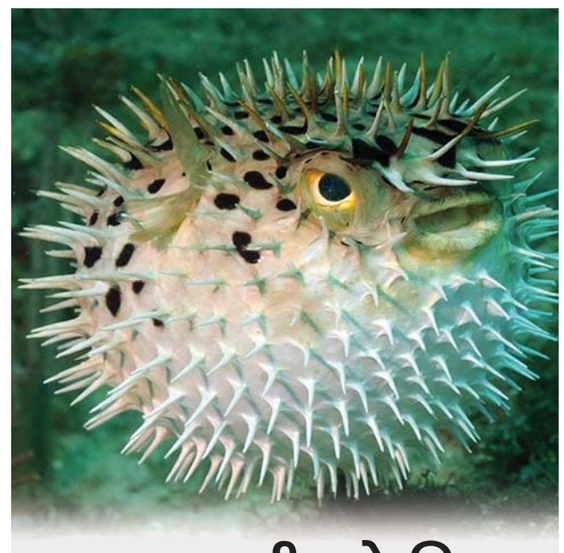

इस मछली को मिला वास्तुकला का ऐसा वरदान, पंख फड़फड़ाते ही बना दे अभेदी किला

फ़िश शब्द जुड़ते ही अमूमन लोग चीज़ों को मामूली समझने की भूल कर बैठते हैं, लेकिन जिस मछली की बात हम कर रहे हैं, न तो वो कोई मामूली मछली है और न ही यह ढूंढने से आसानी से मिलती है। इसलिए इसके बारे में जानकारी रखना आपके लिए बेहद जरूरी है।

वास्तुकला में इंसानों को भी देती मात

इस पर आपको भले ही यक़ीन न हो, मगर ये शत प्रतिशत सच है। दरअसल, पफर फ़िश के पास भगवान का दिया एक नायाब हुनर है। जी हां पफर फिश के पास वास्तु कला का बेहतरीन ज्ञान है। इसकी मदद से यह मछली पानी के नीचे एक क़िला बनाकर रहती है। यदि आप इस मछली द्वारा तैयार किए गए इस अभेदी क़िले को देख लें तो आपको ज़रूर हैरानी होगा होगी। पफर फ़िश भले ही दिखने में एक छोटा सा जीव हो लेकिन इसके द्वार किया गया हर काम अपने आप में अनोखा होता है। पफर फिश द्वारा बनाया ये डिजाइन समुद्र तल पर इतना सुंदर नजर आता है कि देखने वाला बस आखें जमाकर देखता ही रह जाए। कहते हैं कि पफर फ़िश ढूंढने पर भी आसानी से इसलिए नहीं मिलती क्योंकि यह समुद्र तल में बेहद गहराई में रहती है। यहां तक पहुंच पाना किसी गोताखोर के बस की ही बात है। पफर फ़िश बिन हाथ पैरों के केवल अपने पंखों के सहारे ऐसा अभेदी किला तैयार कर देती है। यदि आप इसके डिजाइन को देख लें तो खुद कहेंगे कि यह तो किसी आर्किटेक्ट के द्वारा तैयार किए डिजाइन से कम नहीं है।

अगर दुनिया के सारे ग्लेशियर पिघल जाएं तो क्या होगा?

आपके रोंगटे खड़े देगी वैज्ञानिकों की यह भविष्यवाणी

हमारी पृथ्वी पर बड़ी मात्रा में बर्फ मौजूद है। ग्लेशियर धीरे-धीरे पिघल रहे हैं, जो धरती पर पानी की मात्रा को संतुलित करते हैं। यही पिघलकर नदियों में तब्दील होते हैं और पानी बनता है, जिससे मौसम भी संतुलित रहता है। लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि अगर धरती पर मौजूद सभी ग्लेशियर पिघल जाएं तो क्या होगा? क्या यह धरती के विनाश का कारण बन सकता है?

वैज्ञानिकों का मानना है कि इससे बेहद बुरा असर होगा। धरती पर तापमान पूरी तरह से बिगड़ जाएगा और कई शहर पानी में डूब जाएंगे। दरअसल, अगर धरती पर मौजूद सभी ग्लेशियर पिघल जाएं तो समुद्र का जलस्तर लगभग 60 से 70 मीटर तक बढ़ जाएगा। यानी समुद्र का पानी तटीय इलाकों में फैल जाएगा और इससे बड़े-बड़े शहर जैसे मुंबई, चेन्नई, कोलकाता ही नहीं, बल्कि दुनिया के न्यूयॉर्क और लंदन जैसे शहर भी पूरी तरह पानी में डूब जाएंगे। इन शहरों में रहने वाले सभी लोग बेघर हो जाएंगे और तबाही मच जाएगी।

बहुत बड़ा नुकसान होगा और पूरी दुनिया में तबाही आ जाएगी

इसके अलावा, अगर धरती के सभी ग्लेशियर पिघल जाते हैं तो तटीय इलाके पूरी तरह प्रभावित हो जाएंगे। इनमें रहने वाली एक तिहाई आबादी बेघर हो जाएगी और डूब जाएगी। बड़े-बड़े शहर पानी में समा जाएंगे, जिससे बहुत बड़ा नुकसान होगा और पूरी दुनिया में तबाही आ जाएगी। ज्यादातर शहरों के पानी में डूब जाने से लोग बेघर हो जाएंगे और दूसरे शहरों में शरणार्थी बन जाएंगे। लाखों लोग भुखमरी का शिकार हो जाएंगे और दूसरे इलाकों में जाने को मजबूर होंगे। इससे समाज में अस्थिरता आ जाएगी और संसाधनों की कमी होने लगेगी। हर तरफ झगड़े और संघर्ष होंगे, जिससे पूरी दुनिया की स्थिति बिगड़ जाएगी।

पीने का पानी खत्म हो जाएगा

अगर पूरी दुनिया के ग्लेशियर पिघल जाएंगे तो गंगा, यमुना और ब्रह्मपुत्र जैसी नदियां भी सूख जाएंगी क्योंकि ये नदियां ग्लेशियरों से ही पानी प्राप्त करती हैं। नदियों के सूखने से बिजली उत्पादन पर बुरा असर पड़ेगा, पीने का पानी

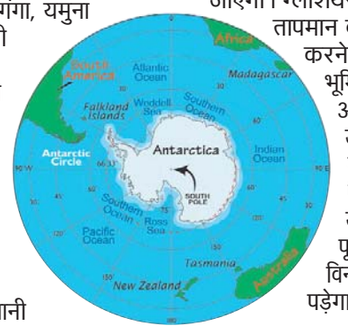

खत्म हो जाएगा और करोड़ों लोग पानी की कमी से जूझेंगे। लोग खेती करना बंद कर देंगे क्योंकि पानी की कमी हो जाएगी। बिना पानी के फसलें नहीं उगेंगी, जिससे कुपोषण और भुखमरी बढ़ेगी। खाने की चीजों की भारी कमी हो जाएगी, जिससे गरीब देशों की हालत और ज्यादा खराब हो जाएगी। ग्लेशियर धरती के तापमान को संतुलित करने में अहम भूमिका निभाते हैं। अगर ये खत्म हो जाएंगे तो मौसम का पूरा पैटर्न बिगड़ जाएगा, जिससे पूरी दुनिया पर विनाशकारी प्रभाव पड़ेगा।

अनोखा आइलैंड जहां रहती हैं सिर्फ महिलाएं!

घर चलाने से लेकर लोगों के अंतिम संस्कार तक करती हैं सारे काम

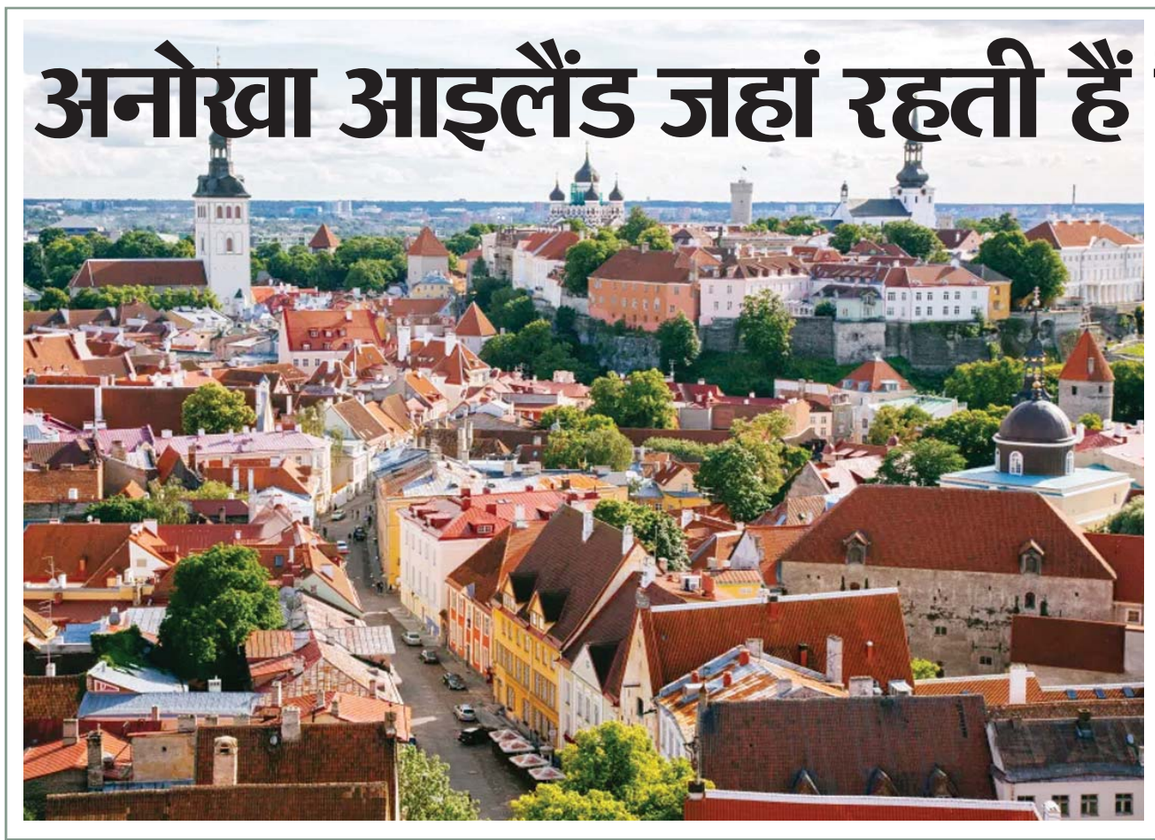

पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं को सिर्फ घर संभालने के लिए ही उपयुक्त माना जाता है. कई रूढ़ीवादी लोगों का तो ये भी मानना होता है कि महिलाएं नौकरी नहीं कर सकतीं, रोजमर्रा के अन्य काम नहीं कर सकतीं, सिर्फ घर चला सकती हैं. ऐसे लोगों के मुंह पर ताले लगाता है एस्टोनिया देश का अनोखा गांव जहां 90 फीसदी से ज्यादा आबादी महिलाओं की है. इस आइलैंड की खासियत ये है कि आइलैंड में अधिकतर महिलाएं रहती हैं जो पूरे द्वीप की जिम्मेदारी संभाले हुए हैं. एस्टोनिया का किहनु आइलैंड, महिलाओं के आइलैंड के नाम से फेमस है. आइलैंड का नाम यूनेस्को के इंटैंजिबिल कल्चरल हेरिटेज ऑफ यूमैनिटी की लिस्ट में शामिल है. इस आइलैंड पर करीब 300 लोग रहते हैं, जिनमें से अधिकतर महिलाएं हैं. आप सोच रहे होंगे कि सिर्फ महिलाएं ही क्यों रहती हैं. पुरुष कहां हैं और क्या ये महिलाएं अविवाहित हैं अगर नहीं तो इनका परिवार कहां है?

महिलाएं करती हैं धार्मिक अनुष्ठान

इन महिलाओं के पति और परिवार के पुरुष एस्टोनिया में नौकरी करने के मकसद से रहते हैं. इसलिए आइलैंड पर अधिकतर महिलाएं ही रह जाती हैं. मगर इन महिलाओं ने इस पूरे द्वीप को इस तरह चलाया है कि सब इनकी तारीफ करते हैं. ये अपनी मान्यताओं और रिवाजों को बनाए रखती हैं. त्योहारों को धूम-धाम से मनाती हैं, नाचती हैं, गाती हैं और मर्दों के पैसों के अलावा शिल्पकारी कर के पैसे कमाती हैं. महिलाएं ही इस द्वीप पर शादियां करवाती हैं वहीं लोगों के अंतिम संस्कार करने का जिम्मा भी इनका ही होता है. मातृसत्ता से बने इस आइलैंड के रिवाजों की खासियत के कारण है यहां के लोग अपनी मान्यताओं से बिखरे नहीं हैं. रिपोर्ट्स की मानें तो आइलैंड पर क्रिमिनल और देश निकाला की सजा भुगत रहे लोग ही रहा करते थे. लगभग 50 सालों तक आइलैंड को सोवियत संघ ने अपने कब्जे में रखा. उस वक्त से ही यहां महिलाओं का वर्चस्व था. हालांकि अब बदलते समय के साथ युवा लड़के-लड़कियां आइलैंड से बाहर जाकर पढ़ाई या नौकरी करना चाहते हैं जिसके कारण अब धीरे-धीरे यहां की खास परंपरा खत्म होती जा रही है.

देशभक्ति के तारानों से सराबोर हुए श्रोता

द सांध्यदीप नेटवर्क, श्रीगंगानगर। एच ब्लॉक स्थित श्रीगुरुनानक कृष्णा मंदिर समिति सार्वजनिक प्रन्यास श्रीगंगानगर के तत्वावधान में एक शाम –वीर शहीदों के नाम कार्यक्रम 80 वे स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में सांध्य कालीन बेला में सायं 6 बजे से रात्रि 9 बजे तक आयोजित हुआ। जिसमें श्रीगुरुनानक कृष्णा मंदिर समिति के पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं के साथ बड़ी संख्या में माँ चिंतपूर्णि सभ्य संकीर्तन मंडल, एच ब्लॉक, मार्केट एसोसिएशन एवं हिमालय परिवार के पदाधिकारी और कार्यकर्ता शामिल हुए। सभी ने अपनी सक्रिय भागीदारी से कार्यक्रम के प्रारम्भ से लेकर अंत तक कार्यक्रम में उपस्थित रहकर शहीदों के प्रति अपनी भावनाओं का इजहार किया। एक शाम- वीर शहीदों के नाम कार्यक्रम को देशभक्ति तरानो से श्रद्धा सुमन अर्पित करने के लिए हिंदी और राजस्थानी फ़िल्मों और टी सीरीज के गीतों के प्रख्यात गायक कलाकार गुरुमुख मुसाफिर, गायक कलाकार अभिषेक जे.एस. (मुंबई)

,रश्मि लाहोरिया, स्थानीय गायक कलाकार मीनू गोस्वामी, वंदना शर्मा, अजय आनंद,सतीश गाबा उपस्थित रहे, जिन्होंने 4 दर्जन से भी ज्यादा देशभक्ति गीतों से कार्यक्रम में समा बाँध दिया। की- बोर्ड पर म्यूजिशियन सोनू कामरा, पेड प्लेयर पर अजय प्रकाश, तबले पर स्नेहदीप सिंह सन्नी,ढोलक पर संतोष कुमार थे। कोरस पर साथ मनिंदर सिंह और तरसेम सिंह ने दिया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में रमेश वितराणा, मंगलचंद डाल,गिरधारी लाल गुप्ता, कमल गुलाटी, कैप्टन राज कुमार,सुखविंदर सिंह,मन्दिर प्रन्यास के अध्यक्ष मनजीत सिंह मंड, समाजसेवी मुनीश कुमार लड्ढा, सूरजाराम सिहाग, पूर्व पार्षद रमेश गर्ग, प्रो. बनवारी लाल शर्मा, पी. सी. गर्ग, मदन मोहन डूंगाबूंगा, पूर्व पार्षद अरविन्द जाटव, राकेश गुप्ता , हरिशंकर तिवारी, ओमप्रकाश शर्मा, हरिमोहन शर्मा, महेश गर्ग, प्रमोद हिन्दुत्व,कृष्ण आसेरी, बलदेव नागपाल,ओम प्रकाश कालड़ा,पूर्व पार्षद प्रहलाद सोनी ने माँ सरस्वती के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित कर पुष्प अर्पित करते हुए शहीदों को श्रद्धांजलि देते हुए किया। कार्यक्रम में हिन्दी फिल्म गद्दार से गद्दारी , राजस्थानी फिल्म चंबल की चमेली, फिल्म जय बाबा खेताराम और टी सीरीज एल्बम तथा सारेगामा पंजाबी सहित कैसैट बेगो तोर ऊंट गाडडो,डीजे पर नाचु सारी रात, नखराली छोरी गीतों के प्रख्यात गायक कलाकार गुरुमुख मुसाफिर नें जीरो दिया मेरे भारत ने- दुनिया को तब गिनती आई, देह शिवा वर मोहे है और कर चले हम फिदा जाने तन साथियों- अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों , मेरे गांव से गुजरने वाली ए हवा- मेरी माँ को मेरा सलाम दे जैसे शानदार देशभक्ति गीतों से देश के शहीदों को श्रद्धांजलि देने से प्रारम्भ किया।

इसी श्रृंखला में गायक कलाकार अभिषेक जे.एस. (मुंबई) ने जहां डाल- डाल पर करती है सोने की चिड़िया बसेरा- वो भारत देश है मेरा, जिन्दगी मौत ना बन जाए सम्भालो यारो और उभरती गायक कलाकारा रश्मि लाहोरिया ने देश भक्ति से ओतप्रोत प्रस्तुतियां देकर उपस्थित दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। ब्लाइंड बच्ची मीनू गोस्वामी ने ए मेरे प्यारे वतन - ए मेरे बिखरे चमन- तुझ पर दिल कुर्बान , वंदना शर्मा ने मेरा मुल्क मेरा देश मेरा ये वतन और अजय आनंद ने है प्रीत जहां की रीत सदा- मैं गीत वहा के गाता हूं.... जैसे गीत गाकर दर्शकों को मन मोह लिया।

मशाल जुलूस : आक्रोश जताया

द सांध्यदीप नेटवर्क, ब्यावर(दिलीप सिंह)। देश के80वें स्वाधीनता दिवस के अवसर पर राजधानी नई दिल्ली स्थित अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के मुख्यालय में कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे,पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी व नेता प्रतिपक्ष लोक सभा राहुल गांधी की उपस्थिति में आयोजित समारोह में राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम् का अपमान किये जाने पर भाजपा जिलाध्यक्ष आशीष सांड के निर्देश पर उदयपुर रोड़ चुंगी नाके पर पूर्व प्रदेश संयोजक भाजपा ओबीसी मोर्चा विक्रांत सिंह रावत के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं ने मशाल जुलूस निकाल कर भारी आक्रोश व्यक्त किया।

राष्ट्रीय गीत रावत ने कहा कि भारत वासी और भाजपा किसी भी सूरत में बर्दाश्त नहीं करेगी।प्रदर्शन के मौके पूर्व मंडल महामंत्री प्रमोद शर्मा,अनिल जांगिड़,शक्ति सिंह रावत,मदन सिंह रावत,मुकेश मेघवाल,विक्रम सिंह रावत,बलवीर सिंह पटेल,श्याम सिंह रावत,लाल सिंह, संदीप रावत,नवीन चौहान,सुनील सिंह,चिमन सिंह,मीरा बाई,नैना देवी,डाली देवी,रामकन्या,निर्मल सिंह,जसवंत सिंह,महावीर सिंह, अजय रावत,दीपक खारोल,देवेंद्र सिंह व जसवंत सिंह इत्यादि मौजूद थे।

श्रीगंगानगर की सफाई कार्य में सुधार के लिए नयी व्यवस्था

द सांध्यदीप नेटवर्क, श्रीगंगानगर। नगर परिषद द्वारा शहर में सफाई व्यवस्था को और अधिक प्रभावी एवं व्यवस्थित बनाने के उद्देश्य से शहर में 04 जोन बनाये तथा प्रत्येक जोन में सफाई निरीक्षकों की ड्यूटी निर्धारित की गई है। इसके तहत सफाई निरीक्षकों को उनके निर्धारित जोन एवं क्षेत्र में सफाई व्यवस्था की नियमित मॉनिटरिंग करने के निर्देश दिए गए हैं। नगर परिषद आयुक्त मिल्ख राज चुघ द्वारा जारी कार्यालय आदेश के अनुसार 04 जोन में सफाई निरीक्षकों को लगाया गया है। विद्या देवी को जोन नं. 1 में (वार्ड नं. 01 से 20 तक), राजकुमार दयाचंद को जोन नं. 2 में (वार्ड नं. 21 से 33 तक), विनोद सोनी को जोन नं. 3 में (वार्ड नं. 34 से 49 तक) तथा नरेशचन्द्र को जोन नं. 4 में (वार्ड नं. 50 से 65 तक) ''सफाई कर्मचारियों की शत-प्रतिशत उपस्थिति, घर-घर कचरा संग्रहण, समय पर कचरे का उठाव, नाला-नालियों की सफाई तथा सफाई के पश्चात सिल्ट उठवाने सहित समस्त सफाई कार्यों की प्रभावी मॉनिटरिंग'' करने के निर्देश दिए गए हैं। संबंधित निरीक्षक अपने निर्धारित क्षेत्र में सफाई व्यवस्था का नियमित निरीक्षण करेंगे तथा सफाई कार्य में किसी प्रकार की कमी पाए जाने पर आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित करेंगे। चारों जोन का प्रभारी स्वास्थ्य अधिकारी को बनाया गया है, सफाई निरीक्षक अपने अपने जोन के मोनिटरिंग की सूचना प्रतिदिन स्वास्थ्य अधिकारी को उपलब्ध करवायेंगे तथा स्वास्थ्य अधिकारी समस्त जोन की इकजाई सूचना आयुक्त के समक्ष प्रस्तुत करेंगे।

आयुक्त मिल्ख राज चुघ ने बताया कि शहर की स्वच्छता व्यवस्था में किसी प्रकार की लापरवाही स्वीकार नहीं की जाएगी। सफाई व्यवस्था की निरंतर निगरानी के माध्यम से यह सुनिश्चित किया जाएगा कि निर्धारित क्षेत्रों में सफाई कार्य नियमित रूप से हो तथा आमजन को स्वच्छ एवं बेहतर वातावरण उपलब्ध हो। आयुक्त मिल्ख राज चुघ ने शहरवासियों से अपील की है कि वे अपने आसपास स्वच्छता बनाए रखने में सहयोग करें।

लक्ष्य चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा धरती के हरित श्रृंगार के लिए वृक्षारोपण अभियान आयोजित

द सांध्यदीप नेटवर्क, श्रीगंगानगर। लक्ष्य चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा पर्यावरण में संतुलन स्थापित करने तथा धरती के हरित श्रृंगार व क्षेत्र को हरा-भरा बनाने के उद्देश्य से वृक्षारोपण अभियान का आयोजन किया गया। लक्ष्य चैरिटेबल ट्रस्ट सदस्य नीरज बेनीवाल ने बताया कि इस कार्यक्रम में संस्था पदाधिकारियों तथा क्षेत्र के गणमान्य व्यक्तियों ने उत्साहपूर्वक भागीदारी निभाते हुए दर्जनों फलदार तथा छायादार पौधे रोपे। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए लक्ष्य चैरिटेबल ट्रस्ट के सचिव राजीव उपाध्याय ने कहा कि पौधरोपण केवल एक कार्य नहीं बल्कि धरती के प्रति हमारा नैतिक कर्तव्य है। इसलिए ट्रस्ट द्वारा रोपे गए सभी पौधों की उनके पूर्ण रूप से विकसित होने तक निरंतर देखभाल सुनिश्चित की जाएगी।

समाजसेवी विजय मुद्गल ने बढ़ते प्रदूषण को गंभीर समस्या बताते हुए कहा कि भावी पीढियों को स्वच्छ वायु उपलब्ध कराने का एकमात्र उपाय व्यापक स्तर पर पेड़ लगाना है। सनेश नादर ने युवाओं को प्रेरित करते हुए कहा कि राष्ट्र को पुनः समृद्ध व हरा-भरा बनाने के

लिए युवाओं की सक्रिय भागीदारी अनिवार्य है, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को जीवन के विशेष अवसरों पर एक पौधा अवश्य लगाना चाहिए। गिरवर चौहान ने पेड़-पौधों को मानव का निष्काम मित्र बताते हुए नागरिकों से अपने घरों के आसपास की खाली भूमि पर पौधरोपण करने का आह्वान किया।

वृक्षों तथा जल चक्र के अटूट संबंध पर प्रकाश डालते हुए नीरज बेनीवाल ने कहा कि पर्याप्त वृक्ष आच्छादन से ही नियमित वर्षा संभव है, जो धरती को बंजर होने से बचा सकती है। लाल चंद बिश्नोई ने पौधरोपण को सर्वोच्च पुण्य कार्य करार देते हुए नए पौधे लगाने के साथ-साथ विद्यमान वृक्षों के संरक्षण तथा उनकी कटाई रोकने पर बल दिया। कार्यक्रम में वक्ताओं ने पर्यावरण संरक्षण के विविध आयामों पर विस्तारपूर्वक जानकारी दी तथा इस हरित अभियान को निरंतर आगे बढ़ाने का संकल्प लिया। इस अवसर पर लक्ष्य चैरिटेबल ट्रस्ट सदस्य तथा गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

अनूपगढ़ के ग्रामीण सेवा शिविर में मोनिका को मिली पशु बीमा पॉलिसी : जन कल्याणकारी योजनाओं का लाभ पहुंचाने के उद्देश्य से आयोजित फॉलोअप ग्रामीण सेवा शिविर जरूरतमंद परिवारों के लिये राहत बन रहे हैं।

अनूपगढ़ पंचायत समिति की ग्राम पंचायत 54 जीबी में मंगलवार को आयोजित फॉलोअप ग्रामीण सेवा शिविर में श्रीमती मोनिका पत्नी राकेश कुमार सहित 13 पशुपालकों के पशुओं का बीमा कर मुख्यमंत्री मंगला पशु बीमा योजना की पॉलिसी वितरित की गई।

वर्मा बने अखिल राजस्थान राज्य कृषि पर्यवेक्षक संगठन श्रीगंगानगर के अध्यक्ष

द सांध्यदीप नेटवर्क, श्रीगंगानगर। अखिल राजस्थान राज्य कृषि पर्यवेक्षक संगठन, उपशाखा श्रीगंगानगर की बैठक मंगलवार को कार्यालय परियोजना निदेशक 'आत्मा' श्रीगंगानगर में आयोजित की गई, जिसकी अध्यक्षता अखिल राजस्थान राज्य कृषि पर्यवेक्षक संगठन के प्रदेश सभाध्यक्ष एवं अखिल राजस्थान राज्य कर्मचारी संयुक्त महासंघ के जिलाध्यक्ष अशोक कुमार कलवानियां ने की। कृषि पर्यवेक्षक संगठन के जिलाध्यक्ष अनिल कुमार फूलभाटी ने बताया कि बैठक को सम्बोधित करते हुए वक्ताओं ने वर्तमान में सरकार द्वारा कर्मचारियों के हितों के प्रतिकूल लिए जा रहे निर्णयों तथा कुठाराघात के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी एवं संगठन की गतिविधियों में सभी सदस्यों से बढ़-चढक़र भाग लेकर संगठन को और अधिक मजबूत बनाने का आह्वान किया।

बैठक के दौरान सर्वसम्मति से चुनाव प्रक्रिया सम्पन्न हुई, जिसमें तामकोट में कार्यरत वरिष्ठ कृषि पर्यवेक्षक इन्द्राज वर्मा को अखिल राजस्थान राज्य कृषि पर्यवेक्षक संगठन, उपशाखा श्रीगंगानगर का अध्यक्ष चुना गया। चुनाव अधिकारी अशोक कुमार कलवानियां द्वारा नवनियुक्त उपशाखा अध्यक्ष इन्द्राज वर्मा को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलवाई गई।

निर्वाचन के पश्चात् अपने सम्बोधन में नवनियुक्त अध्यक्ष इन्द्राज वर्मा ने अध्यक्ष पद हेतु दिए गए सहयोग के लिए सभी सदस्यों का आभार करते हुए संगठन के प्रति पूरी निष्ठा, लगन तथा ईमानदारी से कार्य करने एवं कृषि पर्यवेक्षकों की लंबित समस्याओं के त्वरित निराकरण हेतु निरंतर प्रयास करने का विश्वास दिलाया।

इस अवसर पर प्रदेश संयोजिका महिला प्रकोष्ठ श्रीमती भावना भांभू, खंडीय उपाध्यक्ष चरणदास नायक, जिला महामंत्री अभिषेक शर्मा, जिला कोषाध्यक्ष संजय कांटिया, कृषि स्नातक संघ के संरक्षक तारा चंद लिंबा, जिला सचिव श्रीकृष्ण जांदू, शाखाध्यक्ष भूपेंद्र खैरवा, धीरज सांखला, भूप सिंह सहारण, गौरव गुंबर, विनोद कुमार, मदन लाल, सुधीर कुमार, हंसराज थालोड़, पुष्पा ढ़ाका, अलका रानी, कुलदीप जाखड़, पल्लवी सहित सहायक निदेशक कृषि श्रीगंगानगर कार्यालय के अंतर्गत कार्यरत सहायक कृषि अधिकारी, वरिष्ठ कृषि पर्यवेक्षक एवं कृषि पर्यवेक्षक उपस्थित थे।

नशीली दवाओं पर सख्त कार्रवाई, 9 मेडिकल स्टोर्स के लाइसेंस निलंबित

द सांध्यदीप नेटवर्क, श्रीगंगानगर। हनुमानगढ़ जिले में नशे के रूप में दुरुपयोग की आशंका वाली औषधियों की बिक्री पर प्रभावी नियंत्रण के लिए सख्त कार्रवाई की गई है। जिला कलक्टर डॉ. खुशाल यादव के निर्देशानुसार औषधि नियंत्रण अधिकारियों द्वारा विभिन्न मेडिकल स्टोर्स पर औचक निरीक्षण किए गए। निरीक्षण के दौरान नशीली एवं नियंत्रित दवाइयों के क्रय-विक्रय में अनियमितताएं पाए जाने पर 9 मेडिकल स्टोर्स के ड्रग लाइसेंस निर्धारित अवधि के लिए निलंबित तथा एक मेडिकल एजेंसी का लाइसेंस निरस्त कर दिया गया। साथ ही तीन फार्मासिस्टों के विरुद्ध आवश्यक कार्रवाई के लिए राजस्थान फार्मेसी काउंसिल को भी प्रकरण भेजे गए हैं।

कार्रवाई के तहत मैसर्स मटोरिया मेडिकल स्टोर, पूरबसर का लाइसेंस 20 दिन, मैसर्स कृष्णा मेडिकल स्टोर एवं मैसर्स श्याम मेडिकल स्टोर, पूरबसर के लाइसेंस 15-15 दिन, जबकि मैसर्स एम.बी. मेडिकल एजेंसी, पल्लू, मैसर्स रोहित मेडिकोज, टिब्बी, मैसर्स आर.के. मेडिकल स्टोर, मैसर्स महादेव मेडिकोज तथा मैसर्स अजय मेडिकल एंड जनरल स्टोर, रामसरा नारायण के लाइसेंस 10-10 दिन के लिए निलंबित किए गए हैं। वहीं मैसर्स बालाजी मेडिकल एंड कॉस्मेटिक, रामसरा नारायण का लाइसेंस 7 दिन के लिए निलंबित किया गया है। इसके अतिरिक्त मैसर्स शिव मेडिकोज एजेंसी, टिब्बी का ड्रग लाइसेंस निरस्त कर दिया गया। निरीक्षण के दौरान फर्म द्वारा प्रेगाबालिन-300 एवं टेपेंटाडोल युक्त दवाइयों के क्रय-विक्रय का रिकॉर्ड प्रस्तुत नहीं किया गया। साथ ही गर्भपात में प्रयुक्त होने वाली किट के क्रय-विक्रय संबंधी अभिलेख भी उपलब्ध नहीं कराए गए, जिसके चलते नियमानुसार कठोर कार्रवाई की गई।

सहायक औषधि नियंत्रक एवं लाइसेंसिंग अथॉरिटी अजय कुमार सबल ने बताया कि जिले में नशीली एवं प्रतिबंधित दवाओं के दुरुपयोग पर रोक लगाने के लिए निरीक्षण एवं प्रवर्तन की कार्रवाई लगातार जारी रहेगी। उन्होंने सभी औषधि विक्रेताओं से औषधि एवं प्रसाधन सामग्री अधिनियम तथा संबंधित नियमों की पूर्ण पालना सुनिश्चित करने की अपील करते हुए कहा कि नियमों की अवहेलना करने वालों के विरुद्ध भविष्य में भी कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

जिला स्तरीय समीक्षा एवं सलाहकार समिति की बैठक आयोजित

श्रीगंगानगर। जिला कलक्टर डॉ. अमित यादव की अध्यक्षता में मंगलवार को जिला स्तरीय समीक्षा समिति एवं जिला स्तरीय सलाहकार समिति की बैठक आयोजित हुई। बैठक में वित्तीय वर्ष 2025-26 की जून 2026 तिमाही के जिला क्रेडिट प्लान, वित्तीय समावेशन तथा विभिन्न बैंकों द्वारा किये गए कार्यों की विस्तृत समीक्षा की गई।

जिला कलक्टर डॉ. अमित यादव ने सरकार द्वारा प्रायोजित ऋण योजनाओं में लंबित आवेदनों को गंभीरता से लेते हुए पंजाब नेशनल बैंक एवं भारतीय स्टेट बैंक सहित संबंधित बैंकों को लंबित प्रकरणों का शीघ्र निस्तारण करने के निर्देश दिए। उन्होंने जिला मुख्यालय पर संचालित करंट अकाउंट की जांच करने तथा बैंक खातों को निर्धारित केवाईसी प्रक्रिया पूर्ण किए बिना नहीं खोलने के निर्देश दिए। जिला कलक्टर ने संबंधित अधिकारियों एवं बैंक प्रतिनिधियों को ऋण आवेदनों का समयबद्ध निस्तारण सुनिश्चित करने तथा आवश्यक आंकड़े समय पर प्रस्तुत करने के निर्देश दिए।

बैठक में बैंक ऋणों की रिकवरी, गैर-निष्पादित परिसंपत्ति नियंत्रण पर चर्चा की गई। सामाजिक सुरक्षा योजनाओं पीएमजेजेबीवाई, पीएमएसबीवाई, एपीवाई, कृषि एवं एग्री-इंफ्रास्ट्रक्चर, एमएसएमई, स्वयं सहायता समूह क्रेडिट लिंकेज तथा क्रेडिट-डिपॉजिट रेशो में सुधार के लिये निर्देशित किया गया।

आदर्श समाज के संस्थापक, रामचरित मानस व हनुमान चालीसा के रचयिता रामभक्त कवि गोस्वामी तुलसीदास

रामचरित मानस व हनुमान चालीसा के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास एक महान राम भक्त और महाकवि थे तथा एक समाज सुधारक एवं आदर्श समाज के संस्थापक भी थे। बचपन में रामबोला पुकारे जाने वाले तुलसीदास एक अत्यंत निर्धन, अनाथ बालक थे, जो अपने कर्म, श्रम और शक्ति से ज्ञानी, विद्वान, भक्त महाकवि तुलसीदास बन गए। तुलसीदास की गणना हिन्दी भाषा एवं संस्कृत के सर्वश्रेष्ठ कवियों में की जाती है। तुलसीदास लोक मंगल के ध्वजवाहक हैं, उनकी लेखनी का प्रत्येक शब्द सौहार्द का संदेशवाहक है। वे विश्व साहित्य के अनूठे रचनाकार थे, जिन्होंने हनुमान चालीसा में शाश्वत मूल्यों की व्याख्या की तथा संसार की सत्यता को बताया। तुलसीदास अपनी पत्नी से बहुत प्यार करते थे तथा पत्नी के कठोर वचनों को सुनकर ही उनमें वैराग्य पैदा हुआ और वे महान रामभक्त हो गये। कविता लिखने की महान प्रतिभा उन्होंने कठोर साधना से प्राप्त की। नरहरिदास के शिष्य तुलसीदास ने गुरु से अपार ज्ञान प्राप्त किया था तथा वे वेदांत शास्त्र के विद्वान पंडित थे। उन्होंने वेद, उपनिषद, पुराण, महाकाव्य, खंडकाव्य, दर्शन आदि का अध्ययन किया। उन्होंने बारह पुस्तकों की रचना की, जिसमें रामचरितमानस, गीतावली, कवितावली, वैराग्य संदीपनी, रामाज्ञाप्रश्न, दोहावली, पार्वती मंगल, रामलला नहछू, जानकी मंगल, श्रीकृष्ण गीतावली, बरवै रामायण तथा विनय पत्रिका जन-जन की आस्था का प्रतीक हैं। उन्होंने रामचरित मानस में नैतिक मूल्यों की बातें, संस्कारों की बातें, व्यवहार की बातें, वैराग्य तथा समन्वय स्थापित करने की बात कही है। जीवन के प्रमुख चार मूल्यों धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का रामचरित मानस में बखूबी चित्रण किया गया है। रामचरित मानस की रचना अवधी भाषा में हुई है तथा इस काव्य को मुख्य रूप से दोहा और चौपाई जैसे छंदों में लिखा गया है। तुलसीदास द्वारा परिवार, समाज को कैसे संगठित किया जाये, इस ओर पूरा ध्यान केन्द्रित किया गया है। रामचरित मानस में ज्ञान मार्ग, कर्म मार्ग, ध्यान मार्ग, भक्ति मार्ग व त्याग मार्ग का सुन्दर चित्रण किया गया है। तुलसीदास ने अपनी रचनाओं में

मर्यादा पुरुषोत्तम राम, लक्ष्मण, भरत व हनुमान जैसे पात्रों की भूमिका को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है तथा समाज को समानता व सजगता का पाठ पढ़ाया है। इस महाकाव्य में कई प्रकार की घटनाओं का चित्रण किया गया है। कहीं क्रोध, उत्साह, आश्चर्य, श्रृंगार, करुणा तथा कहीं वीभत्स (घृणायुक्त) दृश्य, तो कहीं वात्सल्य, तो कहीं हँसी की गूंज सुनाई पड़ती है। इस महाकाव्य में राम द्वारा रावण व राक्षसों का संहार करना बुराई पर अच्छाई की विजय को दर्शाता है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम द्वारा स्थापित राम राज्य में सभी लोग सुखी थे, ऐसे ही राम राज्य की आज जरूरत है। रामचरित मानस के सात खण्ड बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किल्किघाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, लंकाकाण्ड तथा उत्तरकाण्ड हैं। सम्पूर्ण रामचरित मानस इतना रसपूर्ण, आनंदमय और महत्वपूर्ण है कि इसे बार-बार पढ़ने की इच्छा होती है। इसको पढने से मनुष्य को ज्ञान व आनंद मिलता है और भक्ति मिलती है। इसलिए यह ग्रंथ सारे भारत में ही नहीं पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। 'परहित सरिस धरम नहिं भाई, पर पीड़ा सम नहिं अधमाई' सुक्ति मनुष्य को सच्चा मार्ग दिखाती है। तुलसीदास की रचनाओं में आये विचार व्यक्ति और समाज को सुधारने में सफल रहे हैं। उनकी सूक्तियों तथा शिक्षाप्रद उक्तियों ने समाज का बड़ा हित किया है। माता-पिता और गुरु के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए। यह शिक्षा रामचरित मानस से हमें मिलती है। गोस्वामी तुलसीदास उच्च कोटि के संत एवं भक्त कवि थे। उन्होंने अपने युग की अनेक समस्याओं को खुले नेत्रों से देखा था और समाज में व्याप्त भयंकर बेकारी-बेरोजगारी और भुखमरी को लेकर 'कवितावली' आदि में आक्रोश-आवेश के साथ अपना मंतव्य स्पष्ट किया था। उन्होंने किसान, श्रमिक, भिखारी, व्यापारी, नौकर, कलाकार आदि की समस्याओं की बखूबी व्याख्या की। तुलसीदास ने अपनी काव्य रचनाओं में प्रभु की भक्ति करने से सत्कर्म की प्रवृत्ति बढ़ती है, का उल्लेख कर मानव को प्रभु भक्ति की ओर अग्रसर किया है।

तुलसीदास द्वारा रचित रामचरित मानस काव्य कम शास्त्र ज्यादा है। आज के भौतिकवादी युग में जब सांस्कृतिक मर्यादाएं बिखर रही हैं। सभ्यता, असभ्यता से पराजित हो रही है, माता-पिता का तिरस्कार हो रहा है। इस स्वार्थी दौर में तुलसी का साहित्य एक मार्गदर्शक बनकर मानव मंगल के लिये उपयोगी है। रामचरित मानस में नारी के लौकिक और अलौकिक दोनों ही रूप परिलक्षित होते हैं। तुलसीदास ने कुनारी तथा कुपुरूष की भर्त्सना की है। उन्होंने सीता-राम की कथा के साथ ही सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन जीने की आचार संहिता भी दी है। उनके द्वारा रचित रामचरित मानस वसुधैव कुटुम्बकम् में पूरा विश्वास जताता है तथा समाज को एक सूत्र में पिरोने का काम करता है। इक्यानवे वर्ष की अवस्था प्राप्त कर संवत् 1680 में वे वाराणसी में दिवंगत हुए। इस महापुरुष की काया समाप्त हो गयी पर अपनी रचनाओं के कारण वह अमर हैं तथा जन-जन के प्रेरणा स्त्रोत हैं।

गोस्वामी तुलसीदास की जयंती पर सभी भारतवासी रामचरित मानस व हनुमान चालीसा में बताये गये मानवीय व नैतिक मूल्यों पर चलने का संकल्प लें, जिससे अपराध, दुराचार, भ्रष्टाचार, आपसी द्वेष, सामाजिक प्रदूषण पर अंकुश लगे तथा मर्यादा पुरुषोत्तम द्वारा स्थापित ऐसे राम राज्य की स्थापना हों, जिसमें सभी भारतवासी सुखी हों तथा आपसी भाईचारा बढ़े।

-मनीराम सेतिया, सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक, श्रीगंगानगर